अनुक्रमणिका

साहित्य रत्न मासिक ई-पत्रिका जनवरी-2024

संपादकीय-
रामअवतार बैरवा

शोध, आलेख, व्यंग्य
1- श्रेया शाण्डिल्य
2- रेखा शाह आरबी

कथा एवं संस्कृति

1- गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'
2- पवित्रा अग्रवाल
3- अनिता रश्मि
4- संदीप सिंह

काव्य-गीत-पद्य-ग़ज़ल
1- व्यग्र पाण्डे
2- महेश शर्मा
3- किशन तिवारी
4- डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय

कला-विशेष-समाचार-सूचना
1- सर्वभाषा कवि सम्मेलन 2024 : एक रूपकात्मक प्रस्तुति
2- त्रिलोक सिंह ठकुरेला को बाल साहित्य भूषण व 'वीरबाला काली बाई स्मृति सम्मान'

दीप जला दो हर चौखट पर, राम पधारे हैं।

कितने ही वर्षों से सञ्चित, इन आँखों में जल है।
पाँव पखारुँ उससे पहले, भीग गया आँचल है।
खुशियाँ इतनी, जैसे कोई रत्नाकर पा जाये
बड़े दिनों के बाद यहाँ, सुखधाम पधारे हैं...।
दीप जला.....।।

कितने ही ब्रत रखे सभी ने, कितने संयम जीते।
तुलसी के बिरवा को देते, अर्ध्य जमाने बीते।
कितने ही संघर्ष बिताये, मन में भी बाहर भी
तब जाकर जग पालक अपने, धाम पधारे हैं...।
दीप जला.....।।

सरयू के तट झूम उठे हैं, झूम उठी है नगरी।
केवट, भील, निषाद मुदित हैं, हर्षित माता सबरी।
मर्यादा का कलश सम्हाले, दोनों ही हाथों में
रघुकुल नन्दन आज हमारे, ग्राम पधारे हैं।
दीप जला.....।।

--राहुल द्विवेदी 'स्मित'

 ISSN:2583-8849